E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(3): 507-508
Received: 15-05-2020
Accepted: 20-06-2020

डॉ. भागवत मंडल
पूर्व शोधार्थी,
विश्वविद्यालय–मैथिली–विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार,
भारत

Corresponding Author:
डॉ. भागवत मंडल
पूर्व शोधार्थी,
विश्वविद्यालय–मैथिली–विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार,
भारत

मैथिली उपन्यासक चरित्र–चित्रण : एक अध्ययन

डॉ. भागवत मंडल

सारांश
उपन्यासक छओ प्रमुख भेद मे दोसर प्रमुख तत्व थीक, 'चरित्र–चित्रण'। वेकन उपन्यासकें गद्यमय कल्पित आख्यान द्वारा जीवनक व्याख्या मानैत छथि। कथा मे चरित्रक कोनो अंश मात्रक झलक भेटैत अछि। उपन्यासक महत्व सम्पूर्ण चित्रक उदघाटन मे रहैत अछि। उत्म उपन्यास कोनो कल्पित व्यक्तिक जीवनी होइत अछि। जखन ओकर जीवनी पूर्ण भए जाइत अछि। तखन ओ स्रष्टा सदृश यथार्थ बनि जाइत अछि। उपन्यासकार वस्तु जगत सँ आवश्यकता अनुसार सामग्री ग्रहण करैत अछि।

प्रस्तावना
उपन्यासक विभिन्न तत्व पर विचार करैत देखल गेल अछि जे पात्र एवं ओकर चरित्र–चित्रण करैत काल उपन्यासकार मानव मूल्यक महत्वपर जोर देवए लगैत छथि। उपान्यासक पात्र मानवे रहैत अछि। एहिमे ओहि विषयक वर्णन रहैत अछि जकर गहन अध्ययन रहैत छनि। उपन्यासक वर्णन सत्यक अनुरूप होइत अछि। कल्पनाक रंग चढ़ायब सहो आवश्यक भ' जाइत अछि। फाँटंरक शब्द मे उपन्यास वास्तविक घटना पर आधारित रहैत अछि। आ पूर्ण रूप सँ परिवर्तित कए दैत अछि। इतिहास जतए क्रियाकलाक वर्णन करैत छथि। क्रिया–कलापक आधार पर चरित्र–चित्रण करैत छथि, उपन्यासकार ओतबहि सँ सन्तुष्ट नहि भ' पात्र अन्तस्तल मे प्रवेश कए सूक्ष्म मनोभावक चित्रण करैत छथि।
उपन्यासकार मनुष्यक अध्ययन, इतिहास कारक सदृश करैत छथि। ओ तात्कालिन रीति–नीतिक प्रभावक संग पात्रक मानसिक द्वन्द्व दुनूक आलोक मे पात्रक चरित्र–चित्रण करैत छथि। एहि कारणसँ उपन्यासक पात्र अधिक शसक्त होइत छथि। उपन्यास मे व्यक्त प्रधान घटनाक अध्ययन कए प्रत्यक्ष क्रिया–कलापक वर्णन कएल जाइत अछि। उपन्यास मे पात्रक स्वभाविक विकास आवश्यक होइत अछि। उपन्यासकें वास्तविक जीवनक व्यावहारिक रूप कहल जाइत अछि। जहिना सभ क्षेत्र आकर्षक नही होइत छैक, तहिना उपन्यासक सभ परिस्थिति मोन कें समान रूपें मुग्ध नहि क' सकैत अछि।
वास्तविक जीवनक पात्रक निर्माण ईश्वर द्वारा होइत अछि। उपन्यासक पात्रक निर्माण मनुष्य करैत अछि। तें हेतु उपन्यासक पात्र अधिक सशक्त होइत अछि। हिन्दीक एक आलोचक कहैत छथि, जे सूर्यक रोशनी ओतेक गर्म नहि होइत अछि। जतेक सूर्यक ताप सँ बालू गर्म होइत अछि। जे सूर्यक तापें सँ गर्म होइत अछि। ओहिना मनुष्य द्वारा निर्मित उपन्यासक पात्र अधिक प्रभाव शाली होइत अछि। मनुष्य अपन अनुभवक आधार पर ओकर निर्माण करैत अछि। कथानक, वातावरण, शैली आ उद्येश्य प्रभृतिक संग पात्रक घनिष्ठ सम्बन्ध रहैत अछि।
जाहि घटनाक संभावना रहैत अछि, ओकरे समावेश उपन्यास मे होइत छैक। उपन्यास मे सफल चरित्र कें लोक नहि बिसरैत अछि। उपन्यासक पात्र अपन सजीवता सँ पाठक कें अपना दिस आकर्षित करैत अछि। एहि निर्बल पात्रक लेल स्थान नहि रहैत अछि। एकर विषय मनुष्य होइत अछि। तें उपन्यासक सब सँ महत्वपूर्ण अंग चरित्र–चित्रण होइत अछि।
उपन्यास एक सम्पूर्ण चित्र होइत अछि। आ चरित्र–चित्रण ओकर अंश होइत अछि। एहि मे शब्दक महत्व रहैत अछि। उपन्यासक घटनाक प्रभाव चरित्र पर परैत अछि। एकरे माध्यम सँ जीवन–दर्शन उपस्थित् होइत अछि। पात्रक पारस्परिक गप्प–सप्प कें माध्यम सँ हुनक चरित्रक परिचय प्राप्त होइत अछि।
चरित्र–चित्रणक महत्व विशेष रूप सँ समाज मे व्यक्ति–चेतनाक भेला सँ आओर अधिक भ' जाइत अछि। पाश्चात्य आलोचकक दृष्टि मे चरित्र–चित्रण उपन्यासक आत्मा मानल जाइत अछि। काव्य मे जे स्थान रसकें प्राप्त अछि, उपन्यास मे वैह स्थान चरित्र–चित्रण कें छैक उपन्यासकार पात्र स्वरूप कें दू प्रकार सँ उपस्थित करैत अछि। प्रथम व्यक्ति मे गुण–दोषक चर्चा रहैत अछि। दोसर पात्रक सृष्टिक अग बनि पाठककें चित्रण सँ निष्कर्ष निकालबाक हेतु छोरि दैत अछि।
हमरा सब जनैत छी जे प्राचीन साहित्यमे दू–प्रकारक प्रधान–पात्रक कल्पना कयल गेल रहैत अछि। मनुष्यक निर्माण दैवी एवं आसुरी दुनू प्रवृति सँ होइत अछि। एकर निर्माण अनेक प्रकारक गुण एवं अवगुण सँ होइत अछि। शरत चन्द्रक कहबछनि जे चरित्र–चित्रण उपन्यासक प्रधान अंग होइत

अछि। चरित्रक क्रमिक विकासक लेल बहुत सावधान रह' परैत छई। उपन्यासक आधार वास्तविक जीवनक घटना होइत अछि। दुगलक कथन जे जीवन सँ कोनो पात्र नवीन संस्कारक बिना आकर्षक नही लगैत अछि। फाँटर अनुसार पात्रक स्वाभाविकता ओ विश्वास उत्पन्न करबाक शक्ति मे छैक। चरित्र–चित्रण मे लेखक कें अदृश्य शक्ति एवं प्रत्यक्ष मनोवैज्ञानिक आश्रय लेऽब' परैत छनि। जे उपन्यासकार पर्यवेक्षणमे जतेक निपुण रहैत छथि, हुनक चरित्र–चित्रण ओतेक आकर्षक होइत छनि। कथानकक आधार कथा होइत अछि। तहिना चरित्र–चित्रणक आधार मनुष्य होइत अछि।

उपन्यासमे पात्रक मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन करब उपन्यासकारक कर्तव्य होइत छनि। मनुष्य सामाजिक प्राणीक रूप मे एक–दोसर सँ जुड़ल रहैत अछि। फाँटंरक अनुसार जीवन मे पाञ्च वस्तु सत्य अछि। जन्म, मृत्यु, भोजन, निद्रा एवं प्रेम। उपन्यास कार पात्रक सब अवस्था सँ परिचित रहैत छथि। पात्रक जन्म एवं मृत्यु उपन्यास कारक सुविधा–असुविधा सँ सेहो सम्बद्ध रहैत अछि। उपन्यासकार पात्रक सृष्टि अन्य विषय कें ध्यान मे रखैत करैत छथि।

उपन्यासक पात्रक जन्म अस्वभाविक रूपे होइत अछि। पात्रक मृत्यक अवस्था धरि लेखककें ओकरा सम्बन्ध मे पूर्ण ज्ञान भऽ जाइत छनि। जन्मक बाद मनुष्य मे शारीरिक परिवर्तन होइत अछि। युवावस्था प्राप्त भेला पर कामक संग अन्य भावना सेहो जागृत होइत अछि। फ्रायड मनोवैज्ञानिकक यैह धारणा छैनि। एहि उपन्यास मे प्रेम भावना प्रधान रहैत अछि।

उपन्यासक पात्र बहुत समय धरि बिना भोजन आ निद्राक रहि सकैत अछि से वास्तविक जीवन मे संभव नही भ' सकैत छइ। उपन्यासक पात्र वस्तु जगतकें पात्र सँ अलग होइत छथि। उपन्यासक पात्र चरित्रक निर्माण कला मे अपुष्ट मानल जाइत अछि। कारण जे चरित्र पर प्रकाश देबाक लेल मनोविश्लेषण करब आवश्यक भ' जाइत अछि। सामाजिक समस्याक समाधानक लेल मनुष्यकें संघर्ष करै परैत छइ। विभिन्न परिस्थित मे मानव अलग–अलग आचरण करैत अछि।

उपन्यासक पात्रक जन्म अस्वभाविक रूप सँ होइत अछि। एहि मे पात्रक अन्दर–बाहर दुनू प्रकारक चित्रण करब उपन्यासकारक कर्तव्य होइत अछि। एहिमे दू प्रकार सँ चरित्रक निर्माण कयल जाइत अछि। फाँटंरक मते एकरा फ्लैट एवं राउण्ड कहल जाइत अछि।

उपन्यास कारक विशेषता वैयक्तिक विशेषताक सूक्ष्म अंकन मे होइत अछि। फाँर्टर कहैत छथि जे स्थिर चरित्रक पात्र मे गतिशीलताक अभाव रहैत अछि। गतिशील चरित्र उपन्यास कें कलाक रूप मे प्रतिष्ठित करबा मे सहायक होइत अछि। एहि सँ उपन्यास आकर्षक बनैत अछि। एकर बिना महत्वहीन भ' जाइत अछि। फ्लैट चरित्र लेखकक उद्येश्य सिद्धि मे सहायक होइत अछि।

उपन्यास कारक वर्ण्य विषय मानवक चरित्र होइत अछि। प्राच्य साहित्य मे जे स्थान रस कें देल गेल अछि वैह स्थान पाश्चात्य आलोचक लोकनि उपन्यास मे चरित्र–चित्रणकें मानैत छथि। प्रेमचन्द उपन्यास कें मानव जीवनक चित्र मानैत छथि। प्रसिद्ध अमेरिकन आलोचक एग्रीक कथन छनि जे चरित्र ओ उपादान अछि जकरा गुणसँ हमरा लोकनि एखन धरि अनभिज्ञ छी।

निष्कर्ष

उपन्यासमे मानव चरित्रक एवं ओकर मानसिक प्रक्रियाक अध्ययन सम्भव भेल अछि। चरित्र–चित्रण पात्रक व्यक्तिगत विशेषताकें प्रकाशमे आनि एक–दोसर सँ भिन्न देखएबाक मार्ग अछि। प्रेमचन्द कहैत छथि– जे बहुत किछु समानता होइतहुँ, किछु भिन्नता होइत अछि। फाँटक कथन छनि, जे उपन्यासक चरित्र तखने स्वाभाविक होइत अछि, जखन उपन्यासकार कें ओकरा सम्बन्ध मे पूर्ण ज्ञान होनि। चरित्रक सम्बन्ध मे एबाँट कहैत छथि, जे कोनो व्यक्ति जे किछु रहैत अछि। सैह ओकर चरित्र रहैत अछि।

संदर्भ

1. मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ. अमरेश पाठक
2. मैथिली उपन्यास आ उपन्यासकार– भूपेन्द्र कुमार चौधरी, प्रकाशन ग्रन्थालय, दरभंगा
3. मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ. अमरेश पाठक
4. मैथिली साहित्यक इतिहास– डॉ. दुर्गानाथ झा ''श्रीश'', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा
5. मैथिली उपन्यासक विकास– अशोक 'अविचल' (संपादक)
6. पवित्र माटि– ई. नमोनाथ, रूणा प्रकाशन, राँची